04.08.2017

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

ललित कला अकादमी द्वारा दृश्य कला फ़िल्मोत्सव का आयोजन

ललित कला अकादमी द्वारा दृश्य कला पर आयोजित चार-दिवसीय फ़िल्मोत्सव का दो अगस्त को रवींद्र भवन के कौस्तुभ सभागार में उदघाटन हुआ। यह फ़िल्मोत्सव कल शनिवार दिनांक 5 अगस्त तक है। कार्यक्रम की शुरुआत 'दृश्य कला पर फ़िल्म निर्माण में शामिल चुनौतियां' विषय पर एक पैनल-चर्चा से हुई जिसमें फ़िल्म आलोचक अरुणा वासुदेव, निर्माता और फ़िल्मकार कपिल मट्टू, फ़िल्मकार बाबू इश्वर प्रसाद ने हिस्सा लिया और संचालन राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फ़िल्म-निर्माता और आलोचक उत्पल बोरपुजारी जी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ललित कला अकादमी के प्रशासक **श्री सि. एस. कृष्ण सेट्टी** जी ने की। उन्होंने सभी वक्ताओं का गुलदस्ता और अंगवस्त्र देकर स्वागत किया। फिल्मोत्सव में प्रदर्शित की जा रहीं सभी फ़िल्में सुश्री डोरोथी मेकिंगल जी के संग्रह से हैं।

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फ़िल्म-निर्माता और आलोचक **श्री उत्पल बोरपुजारी** जी ने कहा कि ललित कला अकादमी का यह आयोजन काबिल-ए-तारीफ़ है। उन्होंने कार्यक्रम में बड़ी संख्या में आये युवाओं की तारीफ़ की। अमित दत्ता निर्देशित 'नयनसुख' और पिछले वर्ष गोवा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव की उद्घाटन फ़िल्म 'आफ्टर इमेज' के कुछ दृश्य प्रदर्शित करते हुए उन्होंने कहा कि ललित कला अकादमी को भी इस प्रकार के आयोजन में फ़िल्मकारों से आवेदन आमंत्रित करने चाहिए जिससे कला और कलाकारों पर बनने वाली फिल्मों को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि अकादमी को राजधानी और साथ ही साथ देश भर में ऐसे फ़िल्मोत्सव आयोजित करने चाहिए।

प्रख्यात फ़िल्म आलोचक **सुश्री अरुणा वासुदेव** ने कहा कि ललित कला अकादमी के पास दृश्य कला का विशाल संग्रह है और मुझे उम्मीद है कि इस प्रकार के आयोजन कला और कलाकारों पर अधिक से अधिक फ़िल्मों के निर्माण के लिए फ़िल्मकारों और निर्माताओं को प्रेरित करने का कार्य करेंगे।

कलाकार और फ़िल्म-निर्माता **श्री बाबू इश्वर प्रसाद** जी ने इस शानदार आयोजन के लिए अकादमी को बधाई दी। पश्चिमी फ़िल्म-निर्माताओं के साथ कार्य करने के अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया कि लेओनार्दो दा विंची पर फ़िल्म बनाते के दौरान बी.बी.सी. ने विंची की नोटबुक में चित्रित मशीनों का भी निर्माण कराया था जिससे पता चलता है कि पश्चिमी देश कला और कलाकारों पर फ़िल्में बनने के प्रति कितने गंभीर हैं। अपनी निर्देशित फ़िल्म 'गालीबीजा' के कुछ दृश्य प्रदर्शित करते हुए उन्होंने कहा कि फ़िल्म एक ऐसी विधा है जो ललित कला की अन्य विधाओं यथा चित्रकला, संगीत, परफोर्मेंस आदि को अपने में निहित करती है। उन्होंने उम्मीद जताई कि यह फ़िल्मोत्सव लोगों को कला और कलाकारों पर आधारित फिल्मों के प्रति जागरूक करेगा।

निर्माता और फ़िल्मकार **श्री कपिल मट्टू** जी ने कहा कि फ़िल्म एक प्रचलित माध्यम है और मुझे लगता है कि अगर दृश्य कला को लोगों को प्रेरित करना है तो इसे स्वयं को एक प्रचलित माध्यम में बदलना होगा। 'रंगरसिया' जैसी फिल्मों का उदहारण देते हुए उन्होंने कहा कि दृश्य कला पर व्यावसायिक फिल्में भी हैं जो इस माध्यम को एक प्रचलित विधा बनाने की ओर ध्यान दिलाती है, जिससे इसके प्रशंसकों का दायरा व्यापक हो सके। उन्होंने कहा कि ललित कला अकादमी को एक फ़िल्म-दीर्घा बनाने के बारे में भी विचार करना चाहिए।

अकादमी द्वारा चार दिनों तक चलने वाले इस फ़िल्मोत्सव में 'अनीश कपूर', 'अमृता शेर-गिल', 'रेम्ब्रांट' जैसी लगभग 25 दृश्य कला फिल्मों का प्रदर्शन किया जा रहा है। आयोजन बड़ी तादाद में हर आय वर्ग के सिनेप्रेमियों और कला विद्यार्थियों को आकर्षित कर रहा है, जिनसे अकादमी को काफ़ी सकारात्मक प्रतिक्रियाएं मिल रही हैं। कल फ़िल्मोत्सव का अंतिम दिन है।